॥ ॐ दुर्गायै नमः ॥

जय अम्बे गौरी आरती

पूर्ण बोल • सरल अर्थ • फ्री PDF 2026

VH Original · vhoriginal.com

नवरात्रि की संध्या आरती में सबसे ज़्यादा यही आरती गूँजती है। नीचे पारंपरिक बोल हैं, हर पद के नीचे सरल अर्थ।

आरती कैसे करें

दीया या कपूर की बाती थाली में जलाएँ। माँ के सामने खड़े होकर आरती घुमाएँ, घंटी बजाएँ। पूरा पद गाकर फिर टेक दोहराएँ — ॐ जय अम्बे गौरी।

ॐ जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी॥

ॐ जय अम्बे गौरी॥

हे अम्बे गौरी, आपको प्रणाम। हरि, ब्रह्मा और शिव नित्य आपका ध्यान करते हैं।

मांग सिंदूर विराजत, टीको मृगमद को।
उज्ज्वल से दोउ नैना, चंद्रवदन नीको॥

ॐ जय अम्बे गौरी॥

माँग में सिंदूर, माथे पर कस्तूरी का टीका, दोनों नेत्र उज्ज्वल, मुख चंद्र जैसा सुंदर।

कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै।
रक्तपुष्प गल माला, कंठन पर साजै॥

ॐ जय अम्बे गौरी॥

अंग सोने जैसा, लाल वस्त्र, गले में लाल फूलों की माला।

केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी।
सुर नर मुनिजन सेवत, तिनके दुखहारी॥

ॐ जय अम्बे गौरी॥

सिंह वाहन, हाथ में खड्ग और खप्पर। देव-मनुष्य-मुनि सेवा करते हैं, आप उनके दुख हरती हैं।

कानन कुंडल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चंद्र दिवाकर, सम राजत ज्योती॥

ॐ जय अम्बे गौरी॥

कानों में कुंडल, नाक में मोती। आपकी ज्योति करोड़ों चंद्र-सूर्य जैसी।

शुंभ-निशुंभ बिदारे, महिषासुर घाती।
धूम्र विलोचन नैना, निशदिन मदमाती॥

ॐ जय अम्बे गौरी॥

शुंभ-निशुंभ का अंत किया, महिषासुर का वध किया। धूम्रलोचन का दर्प तोड़ा।

चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।
मधु-कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे॥

ॐ जय अम्बे गौरी॥

चंड-मुंड और रक्तबीज का संहार किया, मधु-कैटभ मारे, देवताओं का भय हर दिया।

ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी॥

ॐ जय अम्बे गौरी॥

आप ब्रह्माणी, रुद्राणी और कमला हैं। आगम-निगम आपकी महिमा कहते हैं, आप शिव की पटरानी हैं।

चौंसठ योगिनी मंगल गावत, नृत्य करत भैरों।
बाजत ताल मृदंगा, अरु बाजत डमरू॥

ॐ जय अम्बे गौरी॥

चौंसठ योगिनी मंगल गाती हैं, भैरव नृत्य करते हैं, ताल-मृदंग-डमरू बजते हैं।

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुख हरता, सुख संपति करता॥

ॐ जय अम्बे गौरी॥

आप जगत की माता और पालनहार हैं। भक्त का दुख हरती हैं, सुख-संपत्ति देती हैं — यह श्रद्धा का वचन है।

भुजा चार अति शोभित, वर मुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी॥

ॐ जय अम्बे गौरी॥

चार भुजाएँ, वर मुद्रा। सेवा करने वाले मनचाहा फल पाते हैं — ऐसी मान्यता है।

कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती।
श्रीमालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योती॥

ॐ जय अम्बे गौरी॥

सोने की थाली, अगर-कपूर की बाती। मालकेतु में रत्नों सी ज्योति राजती है।

श्री अंबेजी की आरती, जो कोइ नर गावे।
कहत शिवानंद स्वामी, सुख-संपति पावे॥

ॐ जय अम्बे गौरी॥

जो अम्बे की आरती गाता है, शिवानंद स्वामी कहते हैं — सुख-संपत्ति पाता है। यह आस्था की पंक्ति है, वादा नहीं।

॥ इति जय अम्बे गौरी आरती ॥

बोल लोक-प्रचलित पारंपरिक आरती पर आधारित हैं। अर्थ VH Original ने सरल हिंदी में लिखा है। क्षेत्रीय गायन में एक-आध शब्द बदल सकते हैं।

यह आरती हिंदू पुराणों, लोक-परंपरा और घरों में प्रचलित पूजा-पाठ पर आधारित है। तिथि आपके पंचांग से बदल सकती है। यह आस्था का पाठ है — चिकित्सा, कानूनी सलाह या फल की गारंटी नहीं। वेबसाइट इसके उपयोग से होने वाले लाभ-हानि की जिम्मेदारी नहीं लेती।